अलौकिक गीतांजलि - 7

☐ शिव की याद रहेगी तब

अरे शिव की याद रहेगी तब आँखों में समाया वो होगा

हम धन्य तभी बन पायेंगे, जब ऐसा प्रिय जीवन होगा

यहां हमारा तन होगा, वहां हमारा मन होगा

जहां होता मानव का धन, वहीं होता है उसका मन

इसलिए परमात्मा ने बताया, मुझसे लगा लो अपना मन

हम-सा नहीं कोई जमाने में, रचना रचता का ज्ञान जिसे

पर ऐसा भी बनना होगा नहीं कभी अभिमान जिसे

यहां हमारा तन होगा....

यह दुनिया तो मायावी है, माया से भला कैसी यारी

अपने तो दो ही ठिकाने हैं, वैकुण्ठ, दुनिया निराकारी

धुंधला सा अंधियारा है, दीपक से उजियारा होगा

यह आंख भी तन का दीपक है, यह ज्ञान जीवन-दीपक होगा

यहां हमारा तन होगा.....

➢➢ अरे शिव की याद रहेगी तब आँखों में समाया वो होगा

➳ _ ➳ मुरली सुनते हुए शिव की याद रहेगी तो

→ साथ साथ ही धारणा होती जायेगी

➳ _ ➳ खाने खाते हुए शिव की याद रहेगी तो

→ भोजन स्वादिष्ट हो जाएगा

➳ _ ➳ दिन भर कार्य करते हुए शिव की याद रहेगी तो

→ नाचते गाते रहेंगे

→ हलके रहेंगे

➳ _ ➳ गाडी चलाते हुए शिव की याद रहेगी तो

→ गाडी अच्छे से चलेगी

→ रास्ता खुल जाएगा

➳ _ ➳ क्लास कराते समय शिव की याद रहेगी तो

→ विशेष टचिंग प्राप्त होगी

➳ _ ➳ सोने से पहले शिव की याद रहेगी तो

→ Sound Sleep होगी

→ निंद्रा योग निंद्रा बन जायेगी

➢➢ हम धन्य तभी बन पायेंगे, जब ऐसा प्रिय जीवन होगा

➢➢ यहां हमारा तन होगा, वहां हमारा मन होगा

➢➢ जहां होता मानव का धन, वहीं होता है उसका मन

➢➢ इसलिए परमात्मा ने बताया, मुझसे लगा लो अपना मन

➢➢ हम-सा नहीं कोई जमाने में, रचना रचता का ज्ञान जिसे

➢➢ पर ऐसा भी बनना होगा नहीं कभी अभिमान जिसे

➳ _ ➳ ग्यानी के जीवन की सूक्षम बाधा है :- अभिमान

→ अपने पुरुषार्थ का अभिमान हो जाता है

→ ग्यानी जैसे जैसे आगे बढता है... उसका सामना अभिमान से होता है

➳ _ ➳ स्वमान में स्थित होकर ज्ञान को सुनाना है

➢➢ यह दुनिया तो मायावी है, माया से भला कैसी यारी

➢➢ अपने तो दो ही ठिकाने हैं, वैकुण्ठ, दुनिया निराकारी

➢➢ धुंधला सा अंधियारा है, दीपक से उजियारा होगा

➢➢ यह आंख भी तन का दीपक है, यह ज्ञान जीवन-दीपक होगा